रजनीगंधा

[महाविद्यालय का मुखपत्र : द्वितीय पुष्प]

भुवक महासेठ डॉ० धर्मप्रियलाल महिला कॉलेज
मधुबनी (बिहार)

सम्पादक मंडल

प्रो० विनोद कुमार ठाकुर विश्वास'	: संयोजक
प्रो० शिव कुमार दास	: सदस्य
प्रो० रघुनन्दन यादव	: सदस्य
प्रो० शत्रुघ्न पंजियार	: सदस्य
प्रो० काजी मोहम्मद जावेद	: सदस्य
प्रो० नीलम बैरोलिया	: सदस्य
प्रो० सुधारानी	: सदस्य
प्रो० शशिबाला झा	: सदस्य
प्रो० पुरोबी दत्ता	: सदस्य
प्रो० विभूतिनाथ झा	: सदस्य
प्रो० शुभ कुमार साहु	: सदस्य
श्रीमती पूनम सिन्हा	: सदस्य

रजनीगंधा

महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर प्रकाशित

सम्पादक :

प्रो० रघुनन्दन यादव : मैथिली विभाग

प्रो० काजी मोहम्मद जावेद : उर्दू विभाग

प्रो० शत्रुध्न पंजियार : अंग्रेजी विभाग

प्रधान सम्पादक :

प्रो० विनोद कुमार ठाकुर 'विश्वास' : हिन्दी विभाग

भूमक महासेठ डॉ० धर्मप्रिय लाल

महिला महाविद्यालय, मधुबनी

जे० एम० डी० पी० एल० महिला कॉलेज

अपने

वार्षिक समारोह

के अवसर पर उपस्थित

सभी मान्य अतिथियों

का

अभिनन्दन करता है ।

—रजनीबाला अग्रवाल
प्रधानाचार्या

श्रीमती उमा पाण्डेय
मंत्री
शिक्षा तथा राजभाषा, विज्ञान एवं
प्राविधिकी विभाग, बिहार

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि झुमक महासेठ डॉ० धर्मप्रिय लाल महिला कॉलेज अपने १३वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर महाविद्यालय पत्रिका 'रजनीगंधा' के द्वितीय पुष्प का प्रकाशन कराने जा रहा है। मधुबनी जिला शिक्षा के क्षेत्र में, विशेषकर महिला-शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही पिछड़ा समझा जाता है। हर्ष की बात है कि इस महाविद्यालय ने प्रयास कर इसे दूर करने की कोशिश की है।

मैं इस महाविद्यालय के उत्तरोत्तर विकास एवं इसके द्वारा प्रकाशित होनेवाली पत्रिका की सफलता की कामना करती हूँ।

(उमा पाण्डेय)

डॉ० रजनीवाला अग्रवाल
प्रधानाचार्या,
जे०एम०डी०पी० महिला कॉलेज
मधुबनी।

डॉ० धर्मप्रिय लाल
एम.ए. (द्वय), डी.लिट्.
साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, काव्यतीर्थ
भूतपूर्व रीडर, हिन्दी विभाग
ल० ना० मि० विश्वविद्यालय

दरभंगा समाचार कार्यालय,
दरभंगा

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि 'रजनीगंधा' का दूसरा अंक प्रकाशित होने जा रहा है। पहले अंक की सामग्री और सज्जा देखकर ही आशा हो चली थी कि शुरुआत इसके उज्ज्वल भविष्य की द्योतिका है। प्रधानाचार्या डा० रजनीबाला अग्रवाल स्वयं साहित्य-साधना में लगी रहनेवाली एक महिला हैं। उनके मार्गदर्शन में यदि पत्रिका का स्तर प्रशंसनीय न हो तो यही आश्चर्य की बात होगी। प्राध्यापक विश्वास में विश्वास ठीक ही है कि उनकी कलम से जो कुछ निकलेगा या निकलता है वह सुपाठ्य ही। इस पत्रिका रजनीगंधा' के साथ जुड़ा है इस महाविद्यालय का भविष्य।

मैं दोनों की शुभकामना के साथ ही पूर्व में प्रकाशित पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक बधाई दे रहा हूँ।

(धर्मप्रिय लाल)

क्या कहाँ है ?

हिन्दी प्रभाग

चल-अचल सम्पत्ति प्रदानकर्त्ता	क	अश्रुबीज	१६
महाविद्यालय की परिषदें	ख	विडम्बना	१७
बस एक नजर, प्लीज		आखिर क्यों	१८
शिक्षानीति और स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध	१	अच्छा लगता है पान सिर्फ	१९
नारी-मुक्ति दशक	४	मच्छर	२०
रत्ना के प्रति	५	नियति ही यही है	२१
मन्दिर आए कहाँ से	६	एक टुकड़ा पत्थर	२१
कामना	८	बिना शीर्षक	२२
भूगोल	९	जलते रहना	२३
नारी, तेरी समस्याएँ अनेक	१०	हमने सीखा	२३
भारत में मुसलमान और ईसाई	१२	उपहार	२४
हमारी शिक्षण संस्था	१५	गजल	२५
		बुझौअल/हँसगुल्ले	२६

मैथिली प्रभाग

अद्भुत शक्ति—वाणी	एक	बड़ महत्व अछि	छओ
जन-बोनिहार	तीन	मुदा	स त
चेतनाक सीमान	चारि	मिथिला धाम	आठ
क्षोभ	पाँच	असमर्थता	आठ

English Section

Shakespeare & the Gita	1	Sweet Dream	7
New Education Policy	5	Breach of Rules	8

उर्दू

पुराने और नये अफसाने	१	उर्दू जुबान की तारीख	३
	गजल	३	

जीवन का अभियान दान-बल से अजस्र चलता है,
उतनी बढ़ती ज्योति, स्नेह जितना अनल्प जलता है।

—दिनकर

महाविद्यालय को
चल-अचल सम्पत्ति प्रदान करनेवालों की सूची

श्री लक्ष्मी नारायण महासेठ श्री महावीर महासेठ

श्री शुभ नारायण महासेठ

बेलाही (मधुबनी)

श्री नसीब लाल पंजियार श्री शिव नारायण चौधरी

बाबूबरही (मधुबनी) अधिवक्ता, मधुबनी

नारी शिशु कल्याण परिषद्

दरभंगा/मधुबनी

महाविद्यालय की परिषदें : एक झलक

परिषदें	अध्यक्ष	सचिव
हिन्दी साहित्य परिषद्	प्रो० विनोद कुमार ठाकुर विश्वास'	अर्चना रानी
मैथिली ,, ,,	प्रो० रघुनन्दन यादव	अर्चना कुमारी
उर्दू ,, ,,	प्रो० काजी मोहम्मद जावेद	राबिया बेगम
अंग्रेजी ,, ,,	प्रो० शत्रुघ्न पंजियार	नूतन कुमारी
ललित कला ,,	प्रो० उदय नारायण तिवारी	सीमा सिन्हा
विज्ञान ,,	प्रो० नीलम बैरोलिया	मंजू कुमारी
इतिहास ,,	प्रो० शिव कुमार दास	निशात फिरदौस
समाजशास्त्र ,,	प्रो० विनोद प्रसाद अग्रवाल	निशात
राजनीतिशास्त्र ,,	प्रो० आशा महासेठ	रश्मि श्रीवास्तव
मनोविज्ञान ,,	प्रो० रजनी बैरोलिया	राधा कुमारी
अर्थशास्त्र ,,	प्रो० अमरकान्त चौधरी	कनक सिन्हा
दर्शनशास्त्र ,,	प्रो० मीरा दासगुप्ता	निशा कुमारी
गृह विज्ञान ,,	प्रो० शशिबाला झा	सुमिता कुमारी

बस, एक नजर, प्लीज........

..............और प्रस्तुत है महाविद्यालय के मुखपत्र 'रजनीगंधा' का दूसरा अंक।

यह कहने पर 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू' बनने का आरोप लगाया जा सकता है कि यह महाविद्यालय स्तरीय शिक्षण के साथ-साथ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति भी जागरूक रहा है, और उसी क्रम में प्रस्तुत है यह पत्रिका।

यह मात्र औपचारिकता नहीं कि मैं प्रख्यात शिक्षाविद् एवं महाविद्यालय के सचिव डॉ० धर्मप्रिय लालजी, महाविद्यालय की सदस्या श्रीमती सविता सिन्हाजी तथा अपनी प्रधानाचार्या डॉ० रजनीबाला अग्रवाल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा हूँ। यदि इन तीनों ने हर सम्भव सहयोग नहीं दिया होता, तो यह पत्रिका इस रुप में नहीं निकल पाती; अथवा किसी रुप में निकल पाती भी या नहीं, कहना मुश्किल है। इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो० शिव कुमार दास एवं मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो० रघुनन्दन यादव ने भी इसके प्रकाशन में जो भूमिका निभाई है वह दर्शाती है कि किसी समिति के सदस्य को अपने दायित्व का निर्वाह किस रुप में करना चाहिए। वैसे, हमारे कुछ अन्य सहकर्मियों एवं हमारी छात्राओं ने भी इसके प्रकाशन में कम अभिरुचि नहीं दिखलाई है, नहीं तो महज आठ दिन में अस्सी बार तगादे की क्या आवश्यकता थी!

जी हाँ, महज आठ दिनों में ही अस्सी पृष्ठों की इस पत्रिका का मुद्रण-कार्य युनिवर्सल प्रिंटर्स के श्री शिवकान्त ठाकुर ने सम्पन्न किया है, अतएव सेंट-परसेंट शुद्धता का दावा करना अपनी सचाई को रिस्क में डालना होगा। क्षमा-याचना करता हूँ किसी प्रकार की त्रुटि के लिए अपने सुविज्ञ पाठकों से; और उन रचनाकारों से भी जिनकी रचनाओं का लाभ समयाभाव के कारण उठाने से मैं वंचित रह गया हूँ, परन्तु इस बार मुझे अपने अजीजम प्रो० जावेद के साथ-साथ उर्दू की भी तलाश करनेवाले कुतुबत्रों से माफी नहीं माँगनी है, क्योंकि इस या उस रुप में ही सही, रिसाला में उर्दू-तखलीकातों को भी शामिलकर मैं वादाखिलाफी के इल्जाम से बच गया हूँ। हाँ, आगे से, इंशाअल्लाह, उर्दू सेक्शन को दूसरा ही अन्दाज देने की कोशिश करूँगा।

शुभकामना के साथ—

विनोद कुमार ठाकुर 'विश्वास'

जिनके एक हाथ में ज्ञान-दीप है
और दूसरे हाथ में है कर्म-दीप—

हमारे मुख्यमंत्री

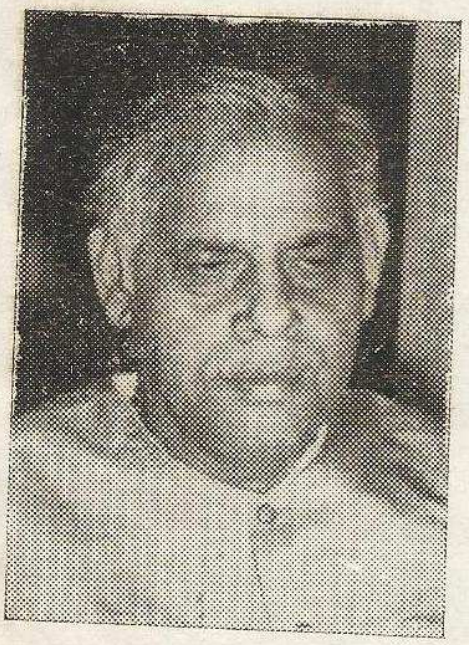

श्री विन्देश्वरी दुबे

वसुधा का नेता कौन हुआ ? भूखंड-विजेता कौन हुआ ?
अतुलित यश-क्रेता कौन हुआ ? नव धर्म-प्रणेता कौन हुआ ?
जिसने न कभी आराम किया,
विघ्नों में रहकर नाम किया ।

—दिनकर

हमारी शिक्षामंत्री

श्रीमती उमा पाण्डेय

नारी, तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत-नग-पग-तल में,
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में ।

—प्रसाद

विश्वविद्यालय-कुल-सचिव के साथ हमारे सचिव

ललित कला परिषद् के उद्घाटन के अवसर पर
डॉ० महेन्द्र ठाकुर एवं डॉ० धर्मप्रिय लाल

मानव ने मानव के भीतर का छुआ तार,
खुल गया हृदय के लिए हृदय का बन्द द्वार।

—प्रभात

ऊँचे-नीचे पर्वत हों या ऊबर-खाबड़ धरती,
या वीहड़ वन में दिन में भी छाया रहे अँधेरा,
या दुस्तर नदियों में मुँह बाये हो खड़ा प्रलय ही,
चलते पंथी को मग में ही मिलता रहा सबेरा।

—किशोर

प्रधानाचार्या डॉ० रजनीबाला अग्रवाल

महाविद्यालय की मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित
विद्यापति जयन्ती के अवसर पर उद्गार व्यक्त करती हुई।

बीती विभावरी, जाग री.....

महाविद्यालय की हिन्दी साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में
प्रसाद-गीत प्रस्तुत करती हुई छात्राएँ

मंजुला कुमारी, सुमिता कुमारी एवं अंजू श्रीवास्तव

महाविद्यालय का प्रवेश-द्वार

श्री हरेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

किसान खाद-बीज भंडार

स्टेशन रोड, मधुबनी

द्वारा निर्मित ।

विशिष्ट आमंत्रित रचना

शिक्षानीति और स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध

● डॉ० डी० पी० लाल

महाविद्यालय-सचिव

नर और नारी के पारस्परिक सम्बन्धों की समीक्षा दो अलग-अलग कसौटियों पर ही की जाती है। एक कसौटी है रासायनिक या पार्थिव सम्बन्ध को परखने की और दूसरी है मानसिक या भावात्मक धरातल पर समीक्षा करने की। इसके अतिरिक्त एक और परख-कसौटी है जो कृत्रिम ही मानी जा सकती है। इस कसौटी पर परखने के लिये जो सम्बन्ध लिया जाता है, उसमें स्त्री और पुरुष अपने को समता के धरातल पर रखते हैं। आज की राजनीति में लिंग के आधार पर भेद-भाव का परित्याग इसी सम्बन्ध की ध्वनि देता है।

भारतीय समाजशास्त्रियों ने पुराचीन समय में एक नियम-सा बना लिया था—शैशव में माता-पिता स्त्रियों को संरक्षण देते थे, युवावस्था में पति, प्रौढ़ावस्था में समाज; इस प्रकार स्त्रियों को सदा रक्षणीया की उपाधि दी जाती थी। संभवतः जिन दिनों ऐसी पद्धति थी उन दिनों स्त्रियों की गणना सम्पत्ति वर्ग में होती थी। अत्यन्त आदिकाल में स्त्रियाँ स्वेच्छाचारिणी होती थीं। उन पर पुरुष वर्ग का नियंत्रण नहीं रहता था। आपस में मिलन के लिये या तो भौतिक परिस्थिति कारण बनती थी या सामाजिक व्यवस्था। धीरे-धीरे पुरुष वर्ग ने, चाहे किसी भी कारण से हो, स्त्रियों को सदा रक्षणीया बनाकर उनपर आधिपत्य स्थापित कर लिया और स्त्री समाज ने इस स्थिति के साथ सहर्ष या कहीं बेवशी से समझौता कर लिया।

समझौता की हालत में अपनी सुरक्षा की दृष्टि से स्त्रियों ने पुरुषों को सौन्दर्य, ममता, भावना आदि के कोमल, पर अत्यन्त प्रभावशाली तन्तुओं से बांधना प्रारंभ किया। दोनों के बीच के सम्बन्ध को स्वर्गीय दिव्य, धार्मिक आदि विशेषण मिले। यहाँतक घोषणा की जाने लगी कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।" वास्तविकता यह है कि परिवार या समाज में यदि स्त्री-पुरुष के बीच का सम्बन्ध मर्यादित और मधुर हो तो घर, परिवार और समाज एक आदर्श स्थल बन जाय। परन्तु आज का संसार इसको न तो स्वीकृति दे सकता है और न इसकी संभावना ही है, कारण अर्थनीति और राजनीति ने हमारी पूरी सामाजिक व्यवस्था पर आधिपत्य जमा रखा है। आज की अर्थनीति और राजनीति व्यक्ति सम्बन्धों को नया रूप देने लगी

है । अर्थनीति के प्रभाव में परिवार बिखराव की ओर तेजी से बढ़ने लगे हैं, क्योंकि बिखराव परिवार की सहज विशेषता है। जो परिवार दो-तीन पीढ़ियों के बाद बिखरता वह आज एक ही पीढ़ी में बिखर रहा है। राजनीति वैयक्तिक स्वातन्त्र्य और वैयक्तिक आत्मनिर्भरता के नाम पर पिता-पुत्र, पति-पत्नी आदि के बीच के सम्बन्धों को भी दुर्बल बनाने में लगी है।

यहीं से स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों पर चिन्तन की नयी दिशा प्रारंभ हो जाती है और वर्तमान शिक्षा पद्धति इसके लिये प्रेरणा देने का काम करने लगती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति का उद्देश्य क्या है—अभी शिक्षाविद् इसी एक प्रश्न का समुचित उत्तर नहीं दे पा रहे हैं। प्राचीन युग में लोग शिक्षा को व्यवहार-कुशलता, बुद्धि की कुशाग्रता, ज्ञानक्षेत्र का विस्तार विवेकशक्ति की प्रखरता, तर्कशक्ति की पुष्टि आदि का माध्यम मानते थे। शास्त्र को एक नयी दृष्टि की संज्ञा देते थे। शिक्षण से छात्र नागरिक बनने की क्षमता पाते थे। आज शिक्षा का एक ही उद्देश्य दीखता है—जीवकोपार्जन के लिए शैक्षणिक उपाधि की प्राप्ति। यहाँतक कि गृहविज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, समाजशास्त्र आदि विषयों का महत्व भी केवल उपाधि प्राप्त करने तक रह गया है।

शिक्षा की यह उद्देश्यहीनता स्त्री समाज को कर्त्तव्य-निर्धारण की क्षमता नहीं दे पा रही है। एक ओर अर्थनीति, राजनीति जहाँ स्त्री-पुरुष सम्बन्ध को नया रूप देने लगी है वहीं सही उद्देश्य-विहीन शिक्षा पद्धति इस सम्बन्ध को सुधारने की अपेक्षा बिगाड़ने में ही लगी है। प्रत्येक स्त्री किसी न किसी की प्रेमिका और किसी न किसी सन्तति की माँ बनना चाहती है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति इन दोनों ही लक्ष्यों तक स्त्री-समाज को पहुँचाने में असमर्थ है। परिणामतः सामाजिक किसी गलत धारणा या पारिवारिक किसी विशेष विवशता के कारण स्त्री-पुरुष का सही जोड़ा न लग सका या जोड़ा बन ही नहीं सका तो अर्थनीति और राजनीति उनमें विद्रोही भावना उत्पन्न करती है। परिणामस्वरूप स्त्री-पुरुष का पारस्परिक मधुर सम्बन्ध या तो समझौता में बदल जाता है या अपनी विशेष दशा में एक वर्ग दूसरे का या तो विरोधी बन जाता है या प्रतिद्वन्द्वी। आज स्थिति यही है।

विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं का यदि सही सर्वेक्षण हो तो स्पष्ट होगा कि विवाह की योग्यता अर्जित करने अथवा विवाहपूर्व जीवन में अनुभूत रिक्तता को पूरा करने के लिये ही अभिभावक लड़कियों को अध्यापन-संस्थानों में भेजते हैं। विवाह होते ही उनका अध्ययन संदेह-दोला पर झूलने लगता है। यह स्थिति सम्पूर्ण भारत की है। यदि विवाह-बंधन में लड़कियाँ नहीं बंधती हैं और वर्तमान शिक्षा उनमें विद्रोही भावना उत्पन्न कर देती है, तो ऐसी स्थिति में उनकी स्थिति समाज में बड़ी विचित्र

हो जाती है। कभी-कभी तो उन्हें ऐसे काम करने को विवश होना पड़ता है जिनके लिये वे मानसिकता कभी बना ही नहीं पाती हैं।

ऐसी स्थिति में मानना पड़ता है कि समाज में स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध आज एक कठिन परीक्षण की राह से गुजर रहा है। न तो पुरुष-समाज और न स्त्री-समाज ही समस्या के समाधान में समर्थ सिद्ध हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति में कुछ ऐसा परिवर्तन होना चाहिये जिससे स्त्री-समाज शिक्षा-ग्रहण के बाद अपने लिये समाज में सही स्थान प्राप्त कर सके। शिशुवर्ग और महिलावर्ग के शिक्षण का भार स्त्रियों पर रहना चाहिये। अतः महिलाओं की आरंभ से ही कुछ ऐसी शिक्षा हो जो उन्हें इस योग्य बना सके। ऐसे ही पुरुषवर्ग की शिक्षा की सीमा भी निर्धारित होनी चाहिये। कुछ चीजें समान रुप से उपयोगी हैं जैसे सामान्य भौगोलिक ज्ञान, विधि ज्ञान, चिकित्सा विज्ञान आदि। शिक्षा की अलग-अलग शाखाओं में दीक्षित व्यक्ति योग्यता प्राप्त करने में सजग रहें, ऐसी ही शिक्षानीति बननी चाहिये, न कि उपाधियाँ प्राप्त कर महिलाएँ रोज नियुक्ति के लिये विज्ञापनों के चक्कड़ में पड़ी रहें। आज स्त्री-पुरुष में विषमता उत्पन्न करने में वर्तमान शिक्षा पद्धति भी बहुत दूर तक दोषी है।

स्त्री और पुरुष के स्वभाव उनके कार्य करने की पद्धति, उनकी जीवन-चर्या, शारीरिक गठन वस्त्राभूषण; सबों में चाहे-अनचाहे भिन्नता रहती ही है। समाजशास्त्रियों और शिक्षाविदों को स्त्री-पुरुष सम्बन्ध की अनिवार्यता समझ शिक्षा पद्धति में आवश्यक परिवर्तन की अनुशंसा सरकार से करनी चाहिये। आज शिक्षा-पद्धति में आमूल परिवर्तन का प्रश्न सरकार के सामने विचाराधीन है।

निज नारियों के साथ यदि कर्त्तव्य अपना पालते,
अज्ञान के गहरे गढ़े में जो न उनको डालते
तो आज नर यों मूर्ख होकर पतित क्यों होते यहाँ ?
होतीं जहाँ जैसी स्त्रियाँ वैसे पुरुष होते वहाँ।

—गुप्त

विशिष्ट आमंत्रित रचना

नारी-मुक्ति दशक

● श्रीमती सविता सिन्हा
सदस्या, महाविद्यालय तदर्थ समिति

सावित्री बनूँ, सीता बनूँ, राधा बनूँ,
मेरी बनूँ, जुलेखा बनूँ, तृप्ता बनूँ,
मीरा बनूँ, लैला बनूँ, हीर बनूँ—
कितनी ही ऐसी तमन्नाओं में कैद हूँ मैं,
जन्म से जवानी और बुढ़ापे तक
कैद की इस चादर को ओढ़कर भी क्रान्ति चाहती हूँ !

पिछला दशक नारी-मुक्ति का दशक रहा है,
लेकिन इसका परिणाम ?
दहेज की खातिर जलती हुई किशोरियाँ,
बलात्कार की वेदी पर चढ़ती
हर उम्र की नारियाँ
और जो बची हैं वे बनीं
सारे जंगलों को रौंदती दस्यु सुन्दरियाँ !

भूगोल और इतिहास के सहारे नारी-मुक्ति स्वप्नवत है,
नर-नारी के द्वन्द्व में ही यह भूभिगत है,
नारी की आत्म सदा से इसी अन्वेषण में रत है।

●

रत्ना के प्रति

डॉ० रजनीबाला अग्रवाल

प्रधानाचार्या

रत्ने ! 'कवि' में यदि तेरा मन
राम-भक्ति का बीज न बोता,
हुलसी-सुत क्या कविवर होते ?
तुलाराम तुलसी क्या होते ?

सावन-भादो की रातों में,
चपला के क्षण-क्षण गर्जन में,
भरी जवानी की सरिता को
चढ़ मुर्दे पर पार न होते,
तुलाराम तुलसी क्या होते ?

चारो ओर किवाड़ लगे थे,
निद्रा में सब लोग पड़े थे,
विरह-व्यग्र कवि वहाँ खड़े थे
लटक रहे विषधर खिड़की से,
वे निर्भयता को जो खोते,
तो तुलसी फिर कवि ना होते,
तुलाराम तुलसी क्या होते ?

तेरे मधुर प्रेम के प्यासे,
लोक-लाज में डूबी तेरी
सुन मीठी फटकार, रुआँसे,
नश्वर तन का मोह त्याग
वैराग्य-सिन्धु में शुद्ध न होते,
तुलाराम तुलसी क्या होते ?

कवि-वैभव के पीछे, रत्ने,
तेरी ही थी विभा सलोनी ।
जग में पूजित उस "मानस" की
तू ही बनी सिद्धि अनहोनी ।
तू न जगाती, तो न जागते
तुलसी के 'कवि" सोते-सोते,
तुलाराम तुलसी क्या होते ?

●

मन्दिर आए कहाँ से ?

● प्रो० उदय नारायण तिवारी

प्राचीन इतिहास विभाग

प्रायः देवी-देवताओं, महापुरुषों आदि की मूर्तियों को जिन स्थानों में प्रतिष्ठित किया जाता है, उन स्थानों को मन्दिर कहा जाता है। कहाँ से आईं ये मूर्तियाँ, कैसे प्रारंभ हुई इनकी पूजा-अर्चना और कैसे बने इन मूर्तियों के मन्दिर—बतला रहे हैं प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति के पुजारी—प्रो० तिवारी।

धार्मिक वास्तुकला के उत्कृष्ट निदर्शन हैं मंदिर। वास्तव में इन्हें भारतीय स्थापत्य की एकमात्र विभूति कहना ही समीचीन है। भारतीय वास्तुकला का विकास मंदिरों में देखा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन मंदिरों का विकास आकृति-पूजा की भावना से हुआ, न कि किसी धर्म-विशेष से।

मनुष्य ने ईश्वर, देवताओं एवं महापुरुषों की उपासना हेतु जो मूर्ति या चिह्न बनाए, कालक्रम की परख रखते हुए उन्हें उन्होंने पवित्र स्थानों में प्रतिष्ठित किया। इनके कई आकार देखे जा सकते हैं। भारत में लगभग सभी धर्मावलम्बियों ने इस सिद्धान्त में आस्था व्यक्त की। ईश्वर, देवताओं एवं महापुरुषों के निवास के ये स्थल 'मन्दिर' नाम से अभिहित किए जाते हैं।

मन्दिरों की उत्पत्ति और विकास का इतिहास पर्याप्त प्रयत्नों के पश्चात् भी प्रकाश में नहीं आ सका है। वैदिक साहित्य के परिशीलन से यह देखा जा सकता है कि मूर्तियों का स्पष्टतः विवरण प्रायः नहीं मिलता है। हाँ इतना अवश्य है कि वेदों में अग्नि, इन्द्र, सविता सूर्य वरुण रुद्र, विष्णु, पृथ्वी, श्री आदि देव-देवियों के नाम अंकित हैं एवं उनकी स्तुति में ऋचाएँ लिखी गयी हैं। इनका विकास चाहे प्राकृतिक शक्तियों के मूर्तन रुप में हुआ हो अथवा वीर पूजा के रूप में पर इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि मूर्तियाँ किसी-न-किसी रूप में अवश्य ही निर्मित होती रही होंगी।

वैदिक काल में मूर्तियों के अस्तित्व को कुछ विद्वानों ने स्वीकार किया है। उन्होंने ऋग्वेद की एक ऋचा का सन्दर्भ देते हुए 'क इमं दशभिर्मम् इन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः' (कौन मेरे इन्द्र को मोल लेगा)—उक्त बात में आस्था व्यक्त की है परन्तु इन्द्र' का प्रयोग यहाँ प्रतीक-रूप में हुआ है जिस प्रकार भारहुत के अभिलेखों में बोधि-वृक्ष एवं पादुका को ही बुद्ध मान लिया गया है।

ब्राह्मण-ग्रन्थों एवं सूत्र साहित्यों में भी इस काल में मूर्तिपूजा के संकेत मिले हैं, परन्तु पुरातात्विक अवशेषों के अभाव में इस मत में आस्था व्यक्त करना बड़ा कठिन हो जाता है। ज्ञातव्य है कि इस काल की कोई भी मूर्ति अब-तक नहीं प्राप्त हो सकी है।

वस्तुतः वैदिक परम्परा में यज्ञों की प्रधानता रही है, यज्ञ ही उपासना के स्वरुप में देखे जाते हैं। वैदिक साहित्य में यज्ञ-वेदी बनाने का विधान भी उपलब्ध है। शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय संहिता, आपस्तम्भ श्रौत सूत्र आदि ग्रन्थों में यज्ञवेदिका के स्वरूप की चर्चा की गयी है।

प्रासाद देवगृह देवस्थान, देवायतन, देवकुल आदि अनेक शब्द ब्राह्मण, सूत्र, महा-भारत तथा रामायण आदि परवर्ती साहित्यों में मिले हैं। ये शब्द इंगित करते हैं कि देवताओं के लिये अवश्य ही कोई वास्तु बनता था जिसके स्वरूप के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। परवर्ती साहित्यों में यक्ष-भवन, यक्ष-चैत्य और यक्ष-आयतन के भी उल्लेख प्राप्त हैं।

लगभग दूसरी-तीसरी शताब्दी ई० पू० के उत्खननों से यह बात स्पष्ट होती है कि चौकोर घेरे मात्र थे ये मंदिर, जिनके बीच पूजाशिला प्रतिष्ठित रही होगी। भारहुत के चित्रों से देवगृह के वर्गाकार और आयताकार होने की बात स्पष्ट होती है। पांचाल नरेशों के सिक्कों पर मिहरावदार मण्डप के दोनों ओर छज्जे निकलते हुए देवायतनों का अंकन मिलता है। औदुम्बरों के सिक्कों पर गोल छतों वाला मण्डप है जिसे शिव मन्दिर की कल्पना के रूप में देखा जा सकता है।

संक्षेप में यही कहना समीचीन प्रतीत होता है कि मन्दिर-निर्माण केवल आध्यात्मिक साधना तथा धार्मिक भावना का मूर्त्त रूप ही नहीं था, बल्कि सामाजिक जीवन का केन्द्र भी था। ये केवल पूजा गृह नहीं, अपितु सांस्कृतिक केन्द्र भी थे। सर्वप्रथम ब्रह्मा, विष्णु और शिव को मंदिरों में स्थान दिया गया, परन्तु विष्णु तथा शिव की तुलना में ब्रह्मा का स्थान गौड़ हो गया।

भारतीय मंदिर देश की परम्परा तथा प्रतिभा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनमें प्राचीन भारत की कला में धर्म के लोकप्रिय स्वरूप की छाप स्पष्टतः परिलक्षित होती है। मंदिरों में शिक्षा की भी व्यवस्था रही है।

कामना

● प्रो० मीना कुमारी
हिन्दी विभाग

ज्योतिपथ के हे गवेषक,
प्राण को आवाज दो ।

राग - सरिता की लहर को
शान्ति का तुम साज दो ।
....आवाज दो ।

मन - विकारी - प्रबल - झंझा
को न निज पर नाज दो ।
....आवाज दो ।

चंचला जो वृत्तियाँ, उन
पर नियंत्रण आज दो ।
....आवाज दो ।

चिर विखंडित स्वप्न - जग
को दिव्यता का राज दो ।
....आवाज दो ।

●

भूगोल है

● प्रो० शुभ कुमार साहु
भूगोल विभाग

पृथ्वी हमारी गोल है—यह विषय भूगोल है।
कहीं मरुभूमि, कहीं हरियाली,
वनस्पति से न धरा है खाली,
अक्षांशों पर हिम की लाली,
जब कभी भूकंप होता, मच जाता अनघोल है।
हमको यह सम्बन्ध बताता
मौलिकता औ' मानवता का,
पाठ पढ़ाता संतुलन का
भ्रंश, वलन औ' संचलन का,
इसका अद्भुत रोल है, यह विषय भूगोल है।
सौर जगत का ज्ञान कराता,
वायु जगत के भेद बताता,
ग्रह हैं कौन, कौन उपग्रह हैं,
बतलाता खगोल है, यह विषय भूगोल है।
पहले यह था अन्य विषय में,
पृथक हुआ बीसवीं सदी में,
मुख्य विषय बन गया पाठ का
अब सचमुच अनमोल है, यह विषय भूगोल है।

●

नारी, तेरी समस्याएँ अनेक

● प्रो० आशा महास्रेठ
राजनीतिशास्त्र विभाग

नारी के अनेक रूपों की चर्चाएँ प्रायः होती ही रहती हैं, परन्तु नारी के साथ अनेक समस्याएँ भी तो जुड़ी हुई हैं । उस 'अबला' के जीवन की 'आँचल में दूध और आँखों में पानी' वाली कहानी पर क्या केवल 'हाय' कहकर रह जाना न्यायोचित है ?

नारी को अबला' कहा गया है। यह सम्बोधन स्वतः इस तथ्य को आलोकित करता है कि नारी का अस्तित्व पूर्णतः पराश्रयी है। बचपन में उसकी रक्षा का भार पिता पर होता है, शादी के बाद उसे अपने पति पर आश्रित रहना होता है, बुढ़ापा में वह पुत्र पर आश्रित होती है। आखिर उसके अस्तित्व में स्वतंत्रता कहाँ है ?

हमारा समाज पुरुष-प्रधान है जिसमें नारी के प्रति उपेक्षा का भाव शाश्वत रूप से विद्यमान है । पुरुष सदा से ही नारी का शोषण करता रहा है। माता-पिता उसे भार कहते हैं, पति उसे संदेह की दृष्टि से देखता है और समाज उसकी उपेक्षा करता है। इस तरह स्वजन-परिजन सभी नारी के प्रति प्रतिकूल मनोवृत्ति रखते हैं। पंत ने नारी की आँखों में सदा आँसू देखे, तुलसी ने उसे 'ताड़न का अधिकारी' कहा और शास्त्रकारों ने 'त्रिया-चरित्र' को संदिग्ध बताया।

वस्तुतः नारी की मर्यादा की रक्षा किसी ने नहीं की। उपेक्षा के वातावरण में यदि नारी जीवन आज समस्याओं का पुँज बन गया है तो इसमें शंका की गुंजाइश कहाँ है ?

माता नौ महीने कठोर शारीरिक कष्ट और पीड़ा को झेलती हुई सन्तान उत्पन्न करती है परन्तु वही संतान उसे प्रताड़ित करती है उसकी अवहेलना करती है। इससे दुखद स्थिति और क्या हो सकती है ! जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की मान्यता आज समाप्त है। यह एक ऐसी समस्या है जो नारी जीवन को अर्थहीन बना देती है।

जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त नारी जीवन समस्याओं से आवेष्ठित रहता है। उसके जन्म पर माता-पिता खुश नहीं होते, परिवार में थाली नहीं बजती, नृत्य-संगीत नहीं होते। जो कुछ भी रस्म-अदायगी होती है वह मात्र औपचारिकता की पूर्ति के लिये, महज खाना-पुरी के लिये। परिवार के लड़कों की शारीरिक रचना के अनुपात में लड़कियाँ स्वयं में कमी महसूस करती हैं इस कारण उनमें हीनता की भावना उत्पन्न होती है जो उनके व्यक्तित्व की एक स्थायी विशेषता बन जाती है ? माता-

पिता द्वारा उपेक्षा उनके जीवन में त्रासदी उत्पन्न करती है, शादी की समस्या उनमें कुंठा निराशा उत्पन्न करती है वैवाहिक जीवन से उनमें संतुष्टि की जगह पारिवारिक दायित्व का गुरुतर भार पड़ता है, संतान की उत्पत्ति उनकी समस्याओं को चौतरफा बढ़ाती है और बुढ़ापा में उन्हें 'डायन' कहा जाता है। यदि इन सारी परिस्थितियों का निष्पक्ष अवलोकन किया जाय तो नारी का सम्पूर्ण जीवन समस्याओं से घिरा माना जायगा।

उनके जीवन में वसन्त शायद ही आता है, चाँदनी शायद ही फूटती है। उनके जीवन में सदा बरसती है दुःख की बरसात और फैली रहती है अमावस की काली अंधियाली। वे जीतीं नहीं, उन्हें जीना पड़ता है। उनका जीवन पिंजड़े के पंछी की तरह सलाखों में कैद होता है, जहाँ उन्मुक्त वातावरण उन्हें शायद ही नसीब है।

बचपन में हीनता की भावना सताती है जवानी उन्हें कलंकित करती है, सुन्दरता उनके लिये अभिशाप है, बुढ़ापा उन्हें आश्रित बनाती है। अर्थ यह है कि नारी का सम्पूर्ण जीवन यातनाओं और कुंठाओं की कहानी है। पुरुष समाज सदा ही उस पर अत्याचार करता रहता है। उसकी स्थिति बंधुआ मजदूर जैसी है। दहेज का अभिशाप उसे भुगतना पड़ता है। कितनी सीताएँ जिन्दा जला दी जाती हैं, कितनी सावित्रियों का अपहरण होता हैं, उन्हें बलात्कार का शिकार होना पड़ता है। इससे अधिक दर्दनाक और शर्मनाक जीवन क्या हो सकता है ?

कभी नारी को 'देवी' की संज्ञा दी गई थी, लेकिन यह अवधारणा आज मात्र इतिहास के पन्नों में बन्द है। आज नारी मात्र भोग-विलास और क्रूर यातनाओं की पात्र बनकर रह गई है। उसका आज न कोई स्वतंत्र अस्तित्व है और न कोई पहचान। उसके अस्तित्व पर आज भी प्रश्न-चिह्न लगा हुआ है।

भारत में मुसलमान और ईसाई

● प्रो० शिव कुमार दास
इतिहास विभाग

प्रायः बुद्धिमान लोग यह जानते हैं कि इस्लाम के उदय से पूर्व यहूदी और ईसाई दक्षिण के अधिकांश बंदरगाहों में आया-जाया करते थे। जब वहाँ के समाज से उन लोगों का सम्पर्क अधिक बढ़ा, तब वे लोग कुछ नगरों में अपने घर बना कर वहाँ रहने लगे।

कुछ वर्ष बीत जाने पर इस्लाम के सितारे का उदय हुआ और उसके प्रकाश की किरणें पूरब से पश्चिम तक चमकने लगीं जिसके परिणामस्वरुप हिन्दुस्तान के दक्षिण को इस्लामी कानून और मुसलमानों के सान्निध्य का लाभ हुआ। इस देश के बहुत से शासकों ने इस्लाम धर्म को ग्रहण किया, भले ही उन्होंने मजबूर होकर ही क्यों न किया हो। गोवा, दामन और चन्द्रानगर आदि बन्दरगाहों के राजाओं ने अरब के विभिन्न भागों से आए हुए मुसलमानों को समुद्र तट पर बसने की इजाजत दे दी। सिर्फ इजाजत ही नहीं दी, वरन् उनके साथ आदरपूर्वक व्यवहार भी किया। इसके कारण इस्लामी और ईसाई द्वेष और ईर्ष्या से जलने लगे। यूरोपियन लोगों के होठों पर खामोशी की मुहर उस समय लगी जब गुजरात के देश दिल्ली के बादशाहों के अधिकार में आए और वहाँ इस्लाम धर्म का पताका फहराने लगा।

काल का चक्र बड़ा कुटिल होता है। जब दक्षिण के शासकों में दुर्बलता आ गई तो इसका फायदा पुर्तगीज ईसाइयों ने उठाया। उन्होंने अपने राजा से आज्ञा प्राप्त कर हिन्द-महासागर के तट पर बन्दरगाह बना लिए। पुर्तगीज ने जमोरिन राजा से प्रार्थना की कि मुसलमानों को अरब के साथ सम्पर्क रखने से अगर रोक दिया जाता है तो मुसलमानों की अपेक्षा आपको हमसे अधिक लाभ होगा। पर राजा ने ऐसी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया। राजा की यह कूटनीति ही समझी जाएगी। इसके परिणामस्वरुप ईसाई लोग मुसलमानों के साथ कठोर व्यवहार करने लगे। इन हरकतों से राजा ने बिगड़कर आदेश दिया कि ईसाइयों को लूटकर मार डाला जाय। ऐसा ही किया गया। कुछ लोग जहाजों में बैठकर भाग गए। भागकर ये लोग कोचीन नगर के निकट उतरे। समुद्र तट पर स्थित एक मस्जिद को तोड़कर उन लोगों ने गिरजाघर बना लिया। शायद मेरी समझ से यह गिरजा घर भारत में ईसाइयों ने सर्वप्रथम बनाया था।

धीरे-धीरे ये लोग काली मिर्च और सोंठ का व्यापार करने लगे जिससे इनलोगों को काफी संतोष हुआ। साथ ही दूसरे लोगों को व्यापार करने से रोक दिया गया। इसके परिणामस्वरुप कोचीन के राजा के पुत्र को

[illegible] की सेना ने मार डाला, पर मारे गये [illegible] के उत्तराधिकारी ने ककपून की तरह [illegible] सेना इकट्ठी कर के सत्ता हस्तगत की। [illegible] नहीं, फिरंगियों की सहायता से [illegible] का भी विकास किया। पुनः प्रति-[illegible] की भावना से जमोरिन की सेना ने आक्रमण किया, पर फिरंगियों की सहायता से विफल [illegible] और जमोरिन की सेना वापस चली गई। [illegible] में जमोरिन ने राजनयिक सम्बन्ध स्थापित कर ईसाइयों के आक्रमणों की शिकायत की और सैनिक सहायता की भी याचना की। इतना ही नहीं, उसने अपने पत्र में यह भी लिखा है कि ईसाइ लोग इस्लाम का अनादर करते हैं। इजिप्ट के सुलतान मंसूर गोरी ने अपने एक अधिकारी अमीर हुसैन को १३ जहाज देकर हिन्दुस्तान के तट की ओर भेजा। गुजरात के सुलतान महमूद ने भी फिरंगियों के विरुद्ध कई जहाज तैयार किए। जब सब जहाजों का सम्मेलन हुआ तब फिरंगियों के एक अग्निपोत ने आक्रमण कर दिया जिससे सारा समुद्र अग्निमय हो गया। बहुत-से मुसलमान शहीद हो गए तथा फिरंगी विजयी होकर अपने बन्दरगाह लौट गए।

अब मुसलमानों का उत्साह भंग हो गया। गोआ दुर्ग को भी छिन गया जिसे युसुफ आदिल शाह ने बनाया था। बाद में दुर्गपति को घूस देकर दुर्ग को अपनी राजधानी बनायी गयी। इससे जमोरिन को काफी सदमा पहुँचा। वैसे भी अवस्था ने उसके एक पाँव को कब्र में धकेल दिया था। लगभग १५१५ में उसकी मृत्यु हो गई।

इसके बाद ईसाई लोग मुसलमानों को और अधिक सताने लगे। यहाँतक कि उन्होंने सम्राट जलाल उद्दीन मुहम्मद अकबर के जहाजों, जो जद्दा से वापस जा रहे थे, को भी लूट लिया। ये जहाज बिना इजाजत लिए मक्का गये थे। ईसाइयों ने मुसलमानों के साथ घृणा और कठोरता का वर्त्ताव किया।

जब सम्राट जलालउद्दीन अकबर के जहाज ईसाइयों ने लूटे, उसी दिन से अरब और ईरान के बन्दरगाहों को जहाज भेजना बंद कर दिया गया। दक्षिण और बंगाल से ही नहीं, हिन्दुस्तान के किसी अन्य बन्दरगाह से भी जहाज नहीं भेजे जा सकते थे क्योंकि फिरंगियों के साथ सन्धि करना शाही शान और प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं था, साथ ही सन्धि किए बिना जहाज भेजना खतरे से खाली नहीं था। इसके बावजूद अब्दुर्रहीम खानखाना और अन्य सरदारों ने बादशाह की अनुमति लिए बिना ही ईसाइयों से संधि कर ली। इस प्रकार जहाज मक्का जाते-आते रहे। जब सम्राट नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर (शेखो बाबा) दिल्ली के सिंहासन पर बैठा तो पुर्तगाल, फ्रांस आदि देशों के ईसाइयों में काफी फूट थी। वे एक-दूसरे के खून के प्यासे थे। बादशाह जहाँगीर ने सूरत में फैक्टरी बनाने के लिए एक स्थान दे दिया। सूरत भारत के समुद्री तट पर पहली अंग्रेज-बस्ती थी। इससे पहले

भी ये हँसमुख व्यापारी लुटेरे अपना माल लाते थे और उसे बेचकर वापस चले जाते थे। धीरे-धीरे उन्होंने सुरसा की तरह भारत के विभिन्न भागों में अपनी व्यापारी कोठियाँ स्थापित कर लीं। आलमगीर औरंगजेब के समय तो कलकत्ता की नींव ही पड़ी।

इस तरह की भूमि पर मुसलमान और ईसाई के संघर्ष में अन्तोगत्वा ईसाई ही सफल रहा। इसकी सफलता का राज कूटनीति और दूरदर्शिता ही कहा जा सकता है। मुसलमानों को भी असफल नहीं कहा जा सकता है।

●

प्रेम ही सर्वोच्च कानून है और सौन्दर्य भी।

—प्रेमचंद

हमारी शिक्षण संस्था....

● रुक्मिणी कुमारी
प्रथम वर्ष कला

यह महिला कालेज हमारा
घर से भी है बढ़कर न्यारा

सन् बहत्तर में स्थापित
स्वच्छ, सुरक्षित औ' अनुशासित
उन्नति पथ पर बढ़ता जाता
सदा बहाए शिक्षा - धारा
यह महिला कालेज हमारा

शिक्षकगण इस शिक्षालय को
नयी नीति से चला रहे हैं
बिलगाने अज्ञान-निशा को
दीप ज्ञान का जला रहे हैं
चमक उठा है परिसर सारा
यह महिला कालेज हमारा

और हमारी प्राचार्या भी
कितना श्रम करती हैं दिन भर
हमें नहीं, सारे समाज को
कैसे गर्व न होगा इन पर
तभी बना आँखों का तारा—
हाँ, हाँ, यह कालेज हमारा

●

पुरस्कृत कविता

अश्रुबीज

● सुमित्रा कुमारी
चतुर्थ वर्ष कला

हिन्दी, क्यों रोती है ?
रोती है शायद इस कारण,
घर में ही मिलता प्यार नहीं;
रानी का पद तो प्राप्त हुआ,
मिल पाया पर अधिकार नहीं !

अब सोती है ?
जाग री उजड़ा नहीं तेरा सुहाग,
है नहीं लगा तेरी चुनरी में दाग
जानते हैं सब तेरा चमकेगा भाग,
स्वयं राख होगी आगे की आग ।

अरी, तू तो हँसती है !
अभी-अभी तो रोती थी, रोते-रोते सो गई,
जाग पड़ी फिर तू थी सपनों में खो गई ?
नहीं, नहीं देखती थी उन पनपते वृक्षों को
जिनके बीज अश्रुकणों से मैं थी बो गई ।

●

पुरस्कृत लघु कथा

विडम्बना

● मंजुला कुमारी

चतुर्थ वर्ष कला

हिन्दी में ऑनर्स के बाद एम. ए. और फिर एम. ए. के बाद पी-एच.डी. करने के बाद वह लेक्चरर बनना चाहता है और बुलाया जाता है सेलेक्शन कमिटी के समक्ष। तीन पदों के इंटरव्यू के लिए कुल तेरह सदस्यों की सेलेक्शन कमिटी है। अभी वह तीन में हैं। सोचता है, कभी तेरह में भी होगा।

'हूँ आपका नाम ?' वह समझ जाता है कि प्रश्नकर्त्ता सचिव ही होगा—एकदम वही अन्दाज, जो प्रायः 'कम पढ़े, अधिक समझने-वाले सचिव' का होता है।

'डॉक्टर लाल बाबू तिवारी'—वह उत्तर देता है।

'तो आप डाक्टर हैं और हिन्दी के प्रोफेसर बनना चाहते हैं। अच्छा, आपका इस्पेशल पेपर क्या था ?' सचिव को पता है कि स्पेशल भी कोई पेपर होता है।

'जी छायावाद'—वह उत्तर देता है।

'अच्छा डाक्टर साहब, छायावाद और इलाहाबाद में बड़ा कौन होता है ?'

'.....।'

'अरे, इतना भी नहीं जानते कि पहले इलाहाबाद हुआ, तब न छायाबाद। अच्छा, एक मामूली सवाल करते हैं। डाक्टर साहब, बतलाइए तो, हिन्दी साहित के कवी गोसुआमी तुलसीदास पौधा के रुप में कइसे उत्पन्न भये ?'

इतना महत्वपूर्ण प्रश्न पूछकर सचिव गर्व से कमिटी के सदस्यों की ओर देखता है, सभी सदस्य सचिव की ओर देखते हैं और वह बेचारा डॉक्टर अपनी ओर देखता है।

डिग्रियों का बोझ थामे वह बाहर निकलता है। बाहर अन्य उम्मीदवार मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़ने में तल्लीन हैं। वह सोचता है ये मूर्ख कोरी पुस्तकें क्यों पढ़ रहे हैं ? सारी पुस्तकों का ज्ञान तो सचिव के मस्तिष्क में समा चुका है। और वह स्वयं अब न तो तीन में है, न तेरह में।

●

आखिर क्यों

● सीमा कुमारी

प्रथम वर्ष कला

बहुत बुरा लगता है
जब मुझे टोक दिया जाता है
समझकर नासमझ।
बहुत बुरा लगता है
जब टोक दिया जाता है
शुरु करते ही
मर्जी का काम
और सौंप दिया जाता है
कोई बोझिल उपदेश
या उबाऊ-सा हुक्म।
बहुत बुरा लगता है
जब मुझे
छोड़ना पड़ता है खेल
अनचाहे मेहमान के वास्ते।
बहुत बुरा लगता है,
लेकिन सब करना भी पड़ता है
झुंझलाकर
आखिर क्यों ?

अच्छा लगता है पान सिर्फ

● कुमारी सिम्मी
प्रथम वर्ष कला

मैं हरदम पान चबाता हूँ।
पान चबाता दाँत निपोड़ कर,
विद्यालय का क्लास छोड़ कर
यार-दोस्त के साथ हमेशा
मीठा, जर्दा दोनों खाता,
पर उधार ही खाता हूँ।
मैं हरदम पान चबाता हूँ।
रिक्शा से ही कालेज जाता,
बीच दोस्त के खूब जमाता;
और परीक्षा की वेला में
कुछ भी कलम चला ना पाता,
सुन रिजल्ट शर्माता हूँ।
मैं हरदम पान चबाता हूँ।

शंकर, मिथिला घर-दरबाजा,
वहीं कभी पी लेता गाँजा,
पान मगर मैं नहीं छोड़ता
सूखा हो या हो वह ताजा,
पींक घोंट भी जाता हूँ।
मैं हरदम पान चबाता हूँ।

मच्छर

● कुमारी सोनी
तृतीय वर्ष कला

छोटा जीव बड़ा दुःखदाई
पड़े न आँखों से दिखलाई
पहले आ कानों पर गाता
पीछे फिर वह डंक चुभाता
दर्द हुआ जो उसको छूआ
हुआ फूल कर मानो पूआ
सदा हमारा लोहू पीता
इसी तरह से है वह जीता
प्यारे बच्चो, तुम हो छोटे
मत बनना मच्छर-से खोटे
कभी किसी का जी न दुखाओ
तुम सब के प्यारे बन जाओ।

●

नियति ही यही है

● विभा श्रीवास्तव
प्रथम वर्ष कला

हाहाकार मच गया!
संसार भटक रहा
पाने को एक छोटी-सी किरण,
कहीं ऐसा न हो,
प्रकाश पाने की खोज में
वह स्वयं भूल जाय
अस्तित्व अपना।
मानव आता रहता,
अवसान उसका होता रहता।
हर जीवन की तरगों में
जरूर कुछ दुख की
छाया नजर आती है।
जाने, कब क्या हो,
नहीं जानता कोई भी,
नियति कब रुख बदल ले,
प्रलय की घटा छा जाये।
सचमुच कौन बता सकता है यह!

●

एक टुकड़ा पत्थर

● कनक सिन्हा
प्रथम वर्ष कला

मैं पत्थर हूँ।
मेरा ही विशाल रुप है पर्वत,
और मैं महज एक छोटा-सा टुकड़ा।
आता आंधी का एक झोंका,
झकझोरता मुझको बलजोर,
मैं स्वभाव से लाचार,
रहना चाहता स्थिर, शान्त,
पर रह नहीं सकता।
उड़ा ले जाता झोंका मुझे
अपनी ही दिशा में
और उड़ता ही जाता मैं।
शायद मुझ जैसे पत्थरों की
नियति ही यही है—
झोकों के साथ उड़ना, उड़ते ही रहना,
क्योंकि मैं विशाल पर्वत नहीं,
महज एक छोटा-सा
टुकड़ा हूँ पत्थर का।

●

बिना शीर्षक की दो कविताएँ

● रंजना मिश्रा
प्रथम वर्ष विज्ञान

खाक में मिला तो क्या ?
फूल फिर भी फूल है,
पर उसे पैदा किया जिसने
वह धूल है, वह धूल है।
जन्मदाता धूल है
पर शूल पाकर भी तो
प्यारा फूल है !
यह प्रकृति की
या नियति की भूल है ?

● विभा कुमारी
चतुर्थ वर्ष कला

सुख की चाह सबों को है,
परन्तु जैसे
फूल चाहनेवालों को
शूलों से
खेलना ही पड़ता है,
वैसे ही जीवन में
सुख चाहनेवालों को
दुख की सरिता में
हेलना ही पड़ता है।

जलते रहना

● रंजना कुमारी
प्रथम वर्ष कला

रात भर जलते रहो
चुपचाप मेरे दीप तुम ।
स्नेह का लिखते रहो
इतिहास, मेरे दीप तुम
लौटकर आए नहीं
दिनमान जब तक पूर्व से,
ज्योति से भरते रहो
आकाश मेरे दीप तुम ।
दीप से जलना न सीखो,
दीप से मुस्कान सीखो ।
सूर्य से ढलना न सीखो,
सूर्य से उत्थान सीखो ।
सोचना है, तुम स्वयं
इस चित्र में अंकित कहाँ हो ।
राह चलना ही नहीं,
तुम राह का निर्माण सीखो ।

हमने सीखा

● रुबी कुमारी सिन्हा
प्रथम वर्ष कला

अम्मा बोली, बनो कृष्ण,
हमने सीखा
सिर्फ चुराना मक्खन ।

अम्मा बोली, बनो राम,
हमने सीखा
धनुष-भंग का लक्षण ।

अम्मा बोली, बनो पवनसुत,
हमने सीखा
सिर्फ जलाना लंका ।

अम्मा बोली, बनो आदमी
हमने सीखा
लाना मन में शंका ।

उपहार

● अलका रानी
बी० ए० (हिन्दी प्रतिष्ठा)

अश्रु-सागर की लहर पर तैरता है कौन
आज मानस-भूमि पर मुद बीज बोता कौन
मूर्च्छना में याद की है सुगबुगाहट आ गई
मन्द मारुत-यान पर चढ़ आ रहा है कौन
चिर प्रतीक्षित प्राण मेरे, यह कहो तुम कौन
तन पुलक संचार कर अब साधते क्यों मौन
चाँदनी-सी चमचमाती मोद की मन-मेदिनी
वेदना के बोज बोकर पा रहा सुख कौन

★

चिर-विरह के तपन संताप को
कौन धो देता छलकते आँसुओं से
वेदना मिश्रित घुटन के शूल में
कौन है देता सहारा बाहुओं से
स्वज-नभ की तारिकाओं को हटाकर
शाद्वली भू पर छुड़ाता राहुओं से

★

विषाद की गम्भीर छाया है सिसकती
हृदय के स्मृति-कारागार में
विस्मृत करता आप अपने-आप को
मिलन के सहज सुषमागार में।
हृदय की वेदना विगलित हुई,
मधुर मुस्कान के उपहार में।

●

पढ़ते हैं गजल

—अनिता
प्रथम वर्ष कला

इस बस्ती के लोगों को क्या हो रहा है
कि ईमान-ओ-इज्जत यहाँ खो रहा है

ये हैं आदमी, पर नहीं लगते इंसाँ
कि इंसानियत का दफन हो रहा है

कई हर रहे चीर अब द्रौपदी के
मगर कृष्ण गोपी के संग सो रहा है

कोई मर रहा है यहाँ खाते-खाते
मरे बिन, कफन को कोई रो रहा है

बहुत हो चुका, अब न पत्थर चलाओ
कि करता है कोई, कोई ढो रहा है

—०—

पहेलियाँ

चन्द्रा कुमारी (प्रथम वर्ष कला)

चढ़ा नाक पर मैं रहता हूँ
पकड़े दोनों कान
बाबू लोग लगाकर मुझको
बड़ी झाड़ते शान

एक मृतक है रोटी खाता
ढँके रखो, मुँह नहीं खोलता
थप्पड़ खाकर खूब बोलता

दो पहेलियाँ खुसरो की—

रीता कुमारी (प्रथम वर्ष कला)

एक नार ने अचरज किया
साँप मार पिंजरे में दिया
ज्यों-ज्यों साँप ताल को खाये
सूखे ताल, साँप मर जाये

अरथ तो इसका बूझेगा
मुँह देखो तो सूझेगा

उत्तर (क्रमशः) : चश्मा, ढोलक, पायजामा, हुक्का।

हँसगुल्ले

आभा रानी (प्रथम वर्ष कला)

❀ एक शराबी रात को नशे में धुत होकर चला जा रहा था कि सड़क के किनारे चलते-चलते वह नाली में गिर पड़ा। उठा और फिर गिरा। यह क्रिया जब तीन-चार बार हुई तो शराबी क्रोध से चिल्ला कर बोला—'ये साले कारपोरेशन वाले भी अजीब हैं। दिन में नालियां सड़क के किनारे कर देते हैं और रात को बीचों-बीच।'

❀ पति (क्रोध से) : 'यही खाना बनाया है ? इसे तो गधे भी खाना नहीं पसन्द करेंगे।' पत्नी (झल्ला कर) : 'हाँ, गधे इसे खाना नहीं पसन्द करेंगे।'

निशात (प्रथम वर्ष कला)

❀ नौकर बड़ा कामचोर था। मालिक की नजरों से हमेशा दूर-दूर रहता था। एक बार मालिक को उसकी जरूरत पड़ी तो चिल्लाकर बोले—"अबे उल्लू, कहाँ है ?"

"घोंसले में सरकार !"—नौकर ने दूसरे कमरे से जवाब दिया।

मालिक फिर चिल्लाए—"गधा !" नौकर बोला "धोबी के घर।"

इस बार मालिक को बेहद गुस्सा आ गया और उन्होंने कहा—"बेवकूफ !"

"इस जानवर को मैं नहीं जानता !" नौकर ने जवाब दिया।

अद्भुत शक्ति—वाणी

● प्रो० रघुनन्दन यादव
मैथिली विभाग

वाणी संसारक गति अछि जाहिसँ सभ ज्ञान। विज्ञानक स्रोत फूटैत अछि आ एहि वाणीक अधिष्ठात्री शक्ति छथि सरस्वती। वाणी कठोरे किएक नहि हो, ओ मनुख कें शक्ति आओर विश्वास प्रदान करैत अछि।

प्राणीक अभिलाषा तृष्णारूपी अछि आओर ओ अतृप्ततामे संगहि पूर्ण होइत अछि। ओ पूर्णता मधुत्वक अन्तिम सीमा होइत अछि। समस्त जीवनक परिवर्तन मधु मे अछि। ॐकार शब्द बनल जे संसार कें देलक मधुमय संसार। एहि जीवनक वास्तविक रस कतए अछि? मधु अछि मधुरता अछि मधुराकांक्षा अछि। ई सभ वाणीक कृपासँ वाणीए वीणा मे झंकृत करत अछि, तारमे मधुर स्वरकें उत्पन्न करैत अछि। भौतिकक गहनतम अन्हार मे वाणीए बाट देखबैत अछि। जोबन मे कुतूहलयुक्त खोज ज्योतिकणक खोज मे भटकत अछि। वाणीक स्फुरण ज्योतिकण बनि जाइत अछि। कवि भर्तृहरि सेहो तृष्णा कें शाश्वत तत्व जनौने छलाह। वाणीक प्रखर चेतना जौं करूणामयी नहि होइत, तऽ आदिकवि वाल्मीकि 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमंगमः' के घोषणा नहि करितैथ, कविवर भवभूति 'एको रसः करुण एव' क अभिव्यक्ति नहि करितैथ और नहि पन्तजीकें ई कहबाक आवश्यकता पड़ितैन्ह—

"वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान।

करुणासँ जागल मानवीय संवेदना। वाणीमे शाश्वत संचेतनाक जन्म दैत अछि। वाणी कठोरे किएक नहि हो, ओ मनुख कें शक्ति आओर विश्वास प्रदान करैत अछि। यदि वाणीमे माधुर्यक मात्रा रहए तखन कोनो बाते नहि। जनश्रुति अछि जे वाणी कतओ ताम्बूल आ कतओ पनही सँ स्वागत करबैत अछि। वाक्पटुता एहि संसारक अमूल्य निधि अछि। पौराणिक युग मे जखन हिन्दू देवी-देवतागणक वाहनक निर्णय भेल, तखन वाणी देवी कें हंस भेटलेन्ह। ओ हंस अपन श्वेत छवि मे सरोवरक यात्रा करैत नीर-क्षीर विवेकी शक्ति कें कखनो नहि बिसरैत अछि। विवेकी हंसक समान स्थिति शुद्ध साहित्यकार क होइत अछि, जेना एकटा उर्दू शायर कहैत छथि—

जुबाँ को बन्द करो या मुझे असीर करो,
मेरे खयाल को बेड़ी पिन्हा नहीं सकते।'

वाक् केर मन सँ बा मन केर वाक् सँ शाश्वत सम्बन्ध अछि। वाणीक पराजय मनक हार होइत अछि। मानसिक तोष वाणी कें स्फूर्ति

प्रदान करैत अछि। एहि सँ वाणी मे निखार अबैत अछि। शब्दशक्ति बुलेट तँ नहि बनि सकैत अछि, परंच कार्य बुलेट सँ अधिक करैत अछि।

एहि सृष्टि कें रचनाकार अद्भुत चित्रकार छथि। हुनकहि कृपा सँ सशक्त वा मधुर वाणी भेटैत अछि। व्यास, बाल्मीकि कौटिल्य एवं कालिदास सन वाणी-विशारद कतेक रूपवान छलाह ?

वाणीक अधिष्ठात्री शक्ति सरस्वती रसवती छथि। सरस्वती सरोवर आओर सरसिज-सभ जल तत्वक अवधारणाक संग-संग अर्थ-विकास सेहो करैत छथि। सरस्वती शब्दशक्तिक मूल स्रोत छथि जे वाणीक नियमन करैत छथि। वैह वाणी संसारक गति अछि जाहि सँ सभ ज्ञान-विज्ञानक स्रोत फूटैत अछि। वैह स्रोत एहि संसार कें भौतिक चमत्कारक माध्यम सँ प्रवाह दैत अछि।

उषाक अरुणाभ लालिमा आओर प्रकृतिक मनोरम हरीतिमा सार्वभौमिक अछि। सभक नजरि एहि नैसर्गिक तत्व पर पड़ैत अछि परंच वाणीए ओकरा मे अनुभूतिक सौन्दर्य-दृष्टि दैत अछि। 'वाग्वै सरस्वती' वाणीए सरस्वती अछि। भारतमे जे किछु श्रेयस अछि ओकर प्रतिनिधित्व वाणीए करैत अछि।

कोनो वस्तु कें सुन्दर वा असुन्दर कहब मनुष्यक हृदय पर निर्भर करैत अछि।

—व्यथित

जन-बोनिहार

● प्रो० देवेन्द्र लाल कर्ण
मैथिली विभाग

पैघ लोक पर ध्यान देथि सभ, छोटको पर किछु ध्यान दिओ,
की छल पहिने, आर अखन की, काल्हि लेल पहचान दिओ।
खून बहा ओ बोनि करैत अछि, तइयो पाबय सुपतो बोनि ?
भूखें बिलखि रहल छै नेना, ओकरा मुँह पर ध्यान दिओ।
अहीं सन अछि ओहो मनुक्खे, अहाँ जकाँ आराम कहाँ ?
पेट बान्हि ओ हड़र जोतै अछि, ओकरो देह मे जान दिओ।
पैघ लोक केर खून लाल, की उज्जर होइछ गरीबक खून ?
चारि साँझ सहि खेत जाय जे ओहि शरीरमे प्राण दिओ।
स्वेद बहा ओ सींचए तरुवर, मिलए अहाँकें तरुवर-फल,
जीवन थटकें बैह भरैत अछि, ओकरो तँ किछु दान दिओ।
आई समाज कृतघ्न बनल अछि, ओ नहि बिसरय गिरहत शब्द,
छी, छी, जुनि दुत्कारी ओकरा, ओकरो तs किछु मान दिओ।

●

चेतनाक सीमान

● प्रो० विभूतिनाथ झा
इतिहास विभाग

किएक, त' नहि होइत छैक अपन कोनो सीमान चेतनाक,
कोनहु कालसत्यक लक्ष्मण-रेखा नहि होइत छैक,
नहि होइत छैक सप्रभताक कोनो चेक-पोस्ट,
तथापि
बेधैत छैक कालसत्य कें
अपन अगोचर वाणसँ,
बेधैत अछि हमर व्यक्तित्वक अंश कें
निविड़ निशा मे
सद्य: प्रज्वलित
किंवा स्ट्रीट लैम्प, मरकरी ट्यूब
अथवा नियोन बल्बक फैलाओल ज्योति-किरण
ओ ओएसिस—सन्देह पीड़ित आशाकाक
शेष अछि बहुतो रास परिभाषा
अथवा शब्दयुग्मक नवलखा हार,
बाँधैत छैक चेतना जाहिसँ
आकर्षक भूलभुलैया,
अतएव, काँपि रहल छैक
बहुतो रास प्रेतछाया, भूत-पिचाश,
परिभाषा ओ मान्यता
हमर चेतनाक सीमान पर।

क्षोभ

● प्रो० भागेश्वर झा
मैथिली विभाग

मानव छी हम बड़ अबोध,
तइयो मोनमे होइत अछि क्षोभ।

हालत देखि एहि मानव समाज कें,
जनिका नहि छन्हि कनिको होश।

कर्त्तव्यक नहिं छन्हि जनिका बोध,
ओ की करताह अधिकारक खोज ?

जाहि समाज मे मानवता केर अग-अंग केर हो विकास,
ओ समाज आई कानि रहल अछि किछु व्यक्ति-विशेषक हाथ।

व्यक्ति चाहैत छथि कहुना जीबी,
अधिकार कहैत छन्हि कर्त्तव्य करी।

मानव कें अपना भाग्य पर कनिञो नहि छन्हि विश्वास,
तें तकइत रहैत छथि हरदम ओ दोसर केर आश

मानव कें कखनहु नहिं हेबाक चाही निराश,
असम्भव संभव भेल अछि अही मानवक हाथ।

गाँधी एलाह एहि पृथ्वी पर नेहरु, सूर, कबीर
हुनको लोक मानवे कहैन्ह, छला ओ कर्मठ वीर।

तें कहैत छी मानव कें राखक चाही मोन धीर
कार्य-कुशल ओ कर्मठता मे सदिखन रहथि प्रवीण।

अपन भावकें राखि रहल छथि,
आशा सँ कवि ताकि रहल छथि

●

बड़ महत्व अछि

● इन्दु कुमारी
प्रथम वर्ष कला

जाड़ मे कोट के, पैरबी मे नोट के,
एलेक्शन मे वोट के, भाई मे छोट के
बड़ महत्व अछि।

हाथ मे घड़ी के, पढ़ाई मे छड़ी के,
भोजन मे बड़ी के, साड़ी मे जड़ी के
बड़ महत्व अछि।

शहर मे नाली के, कान मे बाली के,
तेल बला माली के, सासुर मे साली के
बड़ महत्व अछि।

पढ़ाई मे मैट्रिक के, टार्च मे बैट्री के,
देश मे फैक्ट्री के लड़ाई मे मलेट्री के
बड़ महत्व अछि।

भगवान मे राम के, दोकान मे दाम के,
नौकरौ मे काम के, सात बजे शाम के
बड़ महत्व अछि।

मेडिकल मे आला के, लड़ाई मे भाला के,
सासुर मे साला के, फूलक माला के
बड़ महत्व अछि।

मक्कर मे लाई के, घर मे माय के,
खुट्टा पर गाय के, छोटका जमाय के
बड़ महत्व अछि।

●

.....मुदा

● पुष्पा कुमारी
प्रथम वर्ष कला

छोड़बाक अछि ध्यान
सफाई तक,
मुदा रोगक बजाई तक नहि
करबाक अछि भोजन
मलाई तक,
मुदा पेटक फुलाई तक नहि
रचेबाक अछि मेंहदी
कलाई तक,
मुदा लोकक हँसाई तक नहि
करबाक अछि कोशक
पढ़ाई तक,
मुदा खाली रटाई तक नहि
सहबाक अछि चोट
थुराई तक,
मुदा मोनक कुढ़ाई तक नहि
करबाक अछि काज
अगुआई तक,
मुदा दहेजक लुटाई तक नहि

●

मिथिला धाम

● प्रतिभा कुमारी
प्रथम वर्ष कला

पावन थिक ई मिथिला धाम,
जतए विराजथि सीताराम ।
घर-घर देखल देवी-पूजन,
वचन मधुर जस कोइरी-कूजन,
वचन मधुर जस कोइरी कूजन,
अतिथि-प्रेममे चमकल नाम,
पावन थिक ई मिथिला धाम ।
ज्ञान-क्षेत्र मे नाम एकर अछि,
कर्म-क्षेत्र मे काम एकर अछि,
एहि भूमि केँ करु प्रणाम,
हँ, हँ, थिक ई मिथिला धाम ।

●

असमर्थता

● रश्मिबाला
प्रथम वर्ष कला

भाव जागल / भावना जागय मे असमर्थ
साज बाजल / स्वर बाजय मे असमर्थ
चक्षु फूजल / ज्ञान फूजय मे असमर्थ
कार्य लेलहुँ / कर्म लेबय मे असमर्थ

●

RAJNIGANDHA

May 1985

एक पुरुष की शिक्षा-

एक व्यक्ति की शिक्षा

एक महिला की शिक्षा-

एक परिवार का शिक्षा

युनिवर्सल प्रिंटर्स, मधुबनी।